प्रातःक्लास 20/11/68 ओमशांति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, रूहानी बच्चे याद की यात्रा बैठे हुये हो। अंदर में यह ज्ञान है ना हम आत्माएँ याद की यात्रा पर हैं। यात्रा अक्षर तो ज़रूर दिल में आना चाहिए। जैसे वह यात्राएँ करते हैं, हरिद्वार, अमरनाथ जाते हैं, यात्रा पूरी कर फिर लौटकर आते हैं। यहाँ तुम बच्चों की बुद्धि में है हम जाते हैं शांतिधाम। बाप ने आकर हाथ पकड़ा है। हाथ पकड़कर पार ले जाना होता है ना। कहते भी हैं हाथ पकड़ लो; क्योंकि विषय सागर में पड़े हैं। अभी तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। अंदर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं। इसमें मुख से कुछ बोलना नहीं है। अंदर में सिर्फ याद रहे, बाबा आया हुआ है लेने लिए। याद की यात्रा पर ज़रूर रहना है। याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटते हैं, तब ही फिर उस मंज़िल पर पहुँचेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। जैसे छोटे बच्चों को पढ़ाया जाता है ना। सदैव बुद्धि में यह हो हम बाप को याद करते जा रहे हैं। बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाना। रूहानी बच्चों को ले जाते हैं। आत्मा को ही यात्रा करनी है। हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना है। घर पहुँचें। फिर बाप का काम पूरा हुआ। बाप आये ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। पढ़ाई तो यहाँ ही पढ़नी है। भल घूमो–फिरो, कोई भी काम–काज करो, बुद्धि में यह याद रहे। योग अक्षर में यात्रा सिद्ध नहीं होती। योग अक्षर ही सन्यासियों का है। वह तो सभी है मनुष्य की मत। योग अक्षर मनुष्यों की मत है। बच्चों को समझाया ना एक है मुनष्य मत, दूसरी है ईश्वरीय मत। आधा कल्प तुम मनुष्य मत पर चलते हो। आधा कल्प दैवी मत पर चले हो। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। योग अक्षर नहीं कहो। याद की यात्रा। आत्मा को यह यात्रा करनी है। वह होते हैं जिस्मानी यात्रा। शरीर के साथ जाते हैं। इसमें तो शरीर का काम ही नहीं। आत्मा जानती है हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे ही हम पावन बनेंगे। याद (करते)–2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा। हम बाबा की याद में बैठते हैं; क्योंकि बाबा पास ही जाना है। बाप पावन बनाते हैं। बाप आये ही हैं पावन बनाने सो तो पावन दुनिया में जाना ही है। बाप पावन बनाते हैं फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम पावन दुनिया में जावेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। हम याद की यात्रा पर हैं। हमको फिर इस मृत्युलोक में लौटना नहीं है। बाबा का काम है हमको घर तक पहुँचाना। बाप रास्ता बता देते हैं। अभी तुम मृत्युलोक में हो। फिर अमरलोक नई दुनिया में होंगे। बाप लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में यह नहीं ले जावेंगे। उनकी लिमिट हो जाती है। घर तक पहुँचाना है। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। सिर्फ याद नहीं करना है। साथ में ज्ञान भी चाहिए। ..% ज्ञान से ही तुम धन कमाते हो ना। इस सृष्टि के चक्र की नॉलेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है हमने चक्र लगाया है फिर हम घर जावेंगे। फिर नये सिरे चक्र शुरू होगा। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े। बाबा को भी याद करना है। शांतिधाम, सुखधाम को भी याद करना है। बाप यह दोनों वर्सा देते हैं। शांतिधाम और सुखधाम जाना है। ऐसे नहीं सिर्फ शिवबाबा को याद करना है। 84 का चक्र अगर या(द) नहीं करेंगे तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे? सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है। सिर्फ वह उनको जानते नहीं हैं। ब्रह्म को ही याद करते हैं। बाप तो अच्छी रीत बच्चों को समझाते हैं। याद करते–2 ही तुम्हारे पाप कट जानी है। पहले तो घर जाना है। यह है रूहानी यात्रा। गायन भी है चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात् बाप से दूर रहे। जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। उनको तो जानते ही नहीं। कितने चक्र लगाये हैं। हर वर्ष भी कई यात्रा करते हैं। पैसे बहुत होते हैं तो यात्रा का शौक रहता है। यह तो तुम्हारी है रूहानी यात्रा। तुम्हारे लिए नई दुनिया बन रही है। फिर तुम नई दुनिया में ही आने वाले हो जिसको अमरलोक कहा जाता है। वहाँ काल होता नहीं जो किसको ले जाये। काल को हुकुम ही नहीं है नई दुनिया में आने का। रावण की

यह पुरानी दुनिया है। तुम बुलाते भी हो यहाँ आओ। बाप कहते हैं मैं पुरानी दुनिया और पुराने शरीर में आता हूँ। इसने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं। मैं पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ। तुम पावन बनकर फिर औरों को भी बनाते हो। सन्यासी तो भाग जाते हैं। एकदम गुम हो जाते हैं। पता ही नहीं पड़ता है कहाँ चला गया; क्योंकि वह ड्रेस ही बदल देते हैं। पुलिस को भी सन्यासी ड्रेस में सी॰आई॰डी॰ रखनी पड़ती है। जैसे एक्टर्स रूप बदलते हैं, कब मेल से फिमेल बन जाते हैं, कब फिमेल्स से मेल बन जाते हैं। यह भी चोरों को पकड़ने लिए रूप बदलते हैं। सतयुग में थोड़े ही ऐसी बातें होंगी। यह है छी–2 दुनिया। बाप कहते हैं हम आते हैं फिर नई दुनिया बनाने। फिर ड्रामा प्लैन अनुसार जब द्वापर शुरू होता है तो देवताएँ वाममार्ग में चले जाते हैं। उन्हों के बहुत गंदे चित्र भी हैं। जगतनाथ का मंदिर है उनमें उनके गंदे चित्र हैं। यूँ तो उनकी राजधानी थी। जो खुद विश्व का मालिक था वह फिर मंदिर में जाकर बंद हुआ है। उनका काला मुँह दिखाते हैं। इसी जगतनाथ के मंदिर पर तुम बहुत समझा सकते हो। और कोई इनका अर्थ नहीं समझते हैं। देवताएँ ही पूज्य से पुजारी बनते हैं। वह लोग तो हर बात में भगवान के लिए कह देते आपेही पूज्य आपेही पुजारी..... आप ही सुख देते हो, आपे(आप) ही दुख देते हो। बाप कहते हैं मैं किसको भी दुख देता नहीं हूँ। यह तो समझ की बात है। बच्चा जन्मा तो खुशी होगी। बच्चा मर गया तो रोने लग पड़ेंगे, भगवान ने दुख दिया। अरे, यह अल्पकाल का सुख–दुख तुमको रावण राज्य में मिलता है। मेरे राज्य में दुख की बात ही नहीं। सतयुग को कहा ही जाता है अमरलोक। इनका नाम ही है मृत्युलोक। अकाले मर पड़ते हैं। वहाँ तो बहुत खुशी मनाते हैं। आयु भी बड़ी होती है। बड़े में बड़ी आयु 150 की होती है। यहाँ भी कब–कब कोई की ऐसी होते हैं; परंतु यहाँ स्वर्ग तो नहीं है ना। कोई शरीर को बहुत सम्भाल से रखते हैं तो आयु बड़ी हो जाती है। फिर पीछे कितने हो जाते हैं। परिवार बढ़ता जाता है। वृद्धि जल्दी हो जाती है। जैसे झाड़ से टार–टारियाँ निकलती है, 50 टारियाँ निकलेंगी फिर उनसे और 50 निकलेंगी। कितना वृद्धि को पाते जाते हैं। यह भी ऐसे है। इसलिए इनका मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है। बाकी आदि सनातन देवी–देवता धर्म का फाउंडेशन है नहीं। देवताएँ कब थे। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। आगे कब तुम कब ख्याल भी नहीं करते थे। बाप ही आकर यह सभी बातें समझाते हैं। तुम अभी बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि–मध्य–अंत को भी जान गये हो। दुनिया नई से पुरानी, पुरानी से नई बनती कैसे है, यह कोई भी नहीं जानते।

अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठे हो। यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो–फिरो; परंतु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी, जो पक्के भक्त होते हैं। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भी भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है; क्योंकि उन्हों का शरीर फिर भी सतोप्रधान है। मनुष्यों का शरीर तो पतित है ना। वह तो पावन है फिर द्वापर से लेकर सभी पतित बन पड़ते हैं। नीचे गिरते आते हैं। सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। जिन्न की भी कहानी बताते हैं ना। यह सभी दृष्टांत आदि इस समय के ही हैं। तुम्हारे ऊपर ही बने हुये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। तुम कीड़ों को आप समान ब्राह्मण बनाते हो। यहाँ के ही सभी दृष्टांत हैं। वह सन्यासी लोग फिर कॉपी करते हैं। बाप समझाते हैं वास्तव में उन्हों को कोई कॉपी करने का भी हक नहीं है। शास्त्र पढ़ने का भी हक नहीं। उन्हों का निवृत्ति मार्ग ही अलग है। यात्रा पर भी जाते हैं तो एक ब्राह्मण गाइड ले जाते हैं। सन्यासी कोई ब्राह्मण नहीं है। यात्रा हमेशा ब्राह्मण लोग करते हैं। जिस्मानी यात्रा तुम भी करते थे। अभी फिर बाप द्वारा रूहानी यात्रा सीखते हो। वह ब्राह्मण ही नहीं; परंतु आजकल वह घुस पड़े हैं। बाबा तो सभी क्लीयर कर देते हैं कि कायदा क्या कहता है। कायदे को ज्ञान कहा

जाता है। कायदे को भक्ति नहीं कहा जाता। यह तो पढ़ाई है ना। भक्ति से देखो क्या–2 हो गया है। दिमाग ही न रहा है। जिसके आगे जाते हैं, माथा टेकते ही रहते हैं। एक के भी ऑक्युपेशन को नहीं जानते। हिसाब किया जाता है ना। सबसे जास्ती जन्म कौन लेते हैं, फिर कम होते जाते हैं। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। मनुष्य तो है ही बेसमझ। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं, जबकि क्रिश्चियन की 2000वर्ष पूरी होनी है। वह खुद ही कहते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। तो ज़रूर नई दुनिया होगी। वह लोग कहते हैं; परंतु उनको भी समझाने वाला चाहिए। तुम समझते हो बरोबर स्वर्ग था। भारतवासी तो इतने पत्थर बुद्धि बने हैं, उनसे पूछो स्वर्ग कब था तो लाखों वर्ष कह देंगे। उन लोगों की तो फिर भी बुद्धि अच्छी है। वह बिल्कुल सतोप्रधान भी नहीं बनते तो तमोप्रधान भी इतने नहीं बनते हैं। न बहुत सुख, न बहुत दुख ही पाते हैं। यहाँ तो कितना दुख है! अभी तुम बच्चे समझते हो हम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे। अभी फिर हमको ही बेगर टू प्रिंस बनना है। दुनिया नई सो पुरानी होती है ना। तो बाप कहते हैं मेहनत करो। यह भी जानते हैं माया घड़ी–2 भुला देती है। बाप समझाते हैं बुद्धि में यह सदैव याद रखो हम जा रहे हैं। हमारा इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नैया उस पार जानी है। गाते हैं ना नैया मेरी पार लगाओ। कब पार जाने का है वह भी नहीं जानते। तो मुख्य है याद की बात। बाप के साथ वर्सा भी याद आना है। बच्चे बालिग होते हैं तो फिर बाप का वर्सा ही नज़र में रहता है। तुम तो बड़े हो ही। आत्मा झट जान लेती है बात तो बरोबर है। बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। बाप कहते हैं पवित्र ज़रूर बनना है। पवित्रता के कारण ही झगड़े होते हैं। वह तो बिल्कुल ही जैसे रौरव नर्क में पड़े हैं। और ही जास्ती विक(ारों) में गिरने लग पड़ते हैं। इसलिए बाप से प्रीत रख नहीं सकते। विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना। बाप आते हैं प्रीत बुद्धि बनाने। बहुत हैं जिनकी रिंचक भी प्रीत बुद्धि नहीं है। बाप को कब याद भी नहीं करते हैं। ऐसे भी हैं। बाबा नाम यहाँ नहीं बता सकते हैं। प्राइवेट में बता देंगे, कौन हैं जो शिवबाबा को जानते ही नहीं, मानते ही नहीं हैं। माया का पूरा ग्रहण लगा हुआ है। याद की यात्रा बिल्कुल है नहीं। समझते हैं ब्रह्मा ही समझाते हैं। बाकी सभी गसे(गप्पे) मारते हैं। ऐसे भी ढेर समझने वाली हैं। बाप मेहनत तो करते हैं, यह भी जानते हैं सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ स्थापन हो रही है। सतयुग–त्रेता में कोई भी धर्म स्थापक नहीं होते हैं। राम कोई धर्म स्थापन नहीं करते हैं, यह तो स्थापना करने वाले बाप के द्वारा यह बनते हैं। और धर्म स्थापक और बाप की धर्म स्थापना में रात–दिन का फर्क है। बाप आते ही हैं संगम पर, जबकि दुनिया को बदलना है। बाप कहते हैं कल्प–2, कल्प के संगमयुग पर मैं आता हूँ। उन्होंने फिर युगे–2 अक्षर रांग लिख दिया है। आधा कल्प भक्ति मार्ग भी चलना ही है। भक्तिमार्ग में ही रावण राज्य। झूठ ही झूठ। भक्तिमार्ग के झूठी शास्त्र पढ़ते–2 नीचे ही उतरते आये हैं। तो बाप कहते हैं बच्चे इन बातों को भूलो मत। यह कब मुख से नहीं निकलना चाहिए बाबा हम आपको भूल जाते हैं। अरे, बाप को तो जानवर भी नहीं भूलते। तुम क्यों भूलते हो? अपन को आत्मा नहीं समझते हो। देहअभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो। अभी जैसे बाप समझाते हैं वैसे तुम बच्चों को भी टेव रखनी है। भभके से बात करनी चाहिए। ऐसे नहीं बड़े आदमी के आगे तुम फंक हो जाओ। तुम कुमारियाँ ही बड़े–2 विद्वानों, पंडितों के आगे जाती हो। शंकराचार्य क्या है। तमोप्रधान तो सभी हैं ना। यह है ही तमोप्रधा(न) दुनिया। तो तमोप्रधान मनुष्यों का ही मान है। तमोप्रधान मनुष्य, तमोप्रधान का ही मान रखेंगे। उनको यह पता नहीं है तुम अभी सतोप्रधान बन रहे हो। तुम कितना भी समझाओ कब बुद्धि में बैठेगा ही नहीं। कहेंगे फिर समय लेकर समझेंगे। ऐसे–2 करते–2 समय ही पूरा हो जावेगा। उन्हों को बाप से प्रीत रखनी नहीं है। इसलिए गायन है कौरवों की विपरीत बुद्धि। पाण्डवों की है प्रीत बुद्धि। तुम यह रूहानी यात्रा सिखलाने वाले पण्डे हो।

बुद्धि में यह याद है हम अभी शांतिधाम–सुखधाम जा रहे हैं। यहाँ से पहले हम शांतिधाम जावेंगे। फिर हम सुखधाम में आवेंगे। इसलिए समझाया जाता है बाप को याद करो। यह यात्रा करो तो सुखधाम में चले जावेंगे। इस दुखधाम को भूल जाना है। यह है बेहद का सन्यास। यहाँ तो सभी तरफ दुख ही दुख है। पहले नम्बर में तो तुम दुखी थे। भारत ही सुखधाम था, अब भारत ही दुखधाम बना है। भारत अविनाशी खंड है; क्योंकि अविनाशी बाप की यहाँ पधरामणी होती है। यह खंड कब विनाश नहीं होता है। जब सतयुग है तो और कोई खंड होता ही नहीं सिवाय भारत के। बाप की भी यहाँ ही पधरामणी होती है। उन्होंने तो परमात्मा को ठिक्कर–भित्तर में डाल दिया है। इसलिए बाप समझाते हैं भक्ति में है ही दुर्गति। ज्ञान से सर्व की सद्गति होती है। सद्गति दाता है ही ज्ञान सागर बाप। बाप कहते हैं मैं कब मनुष्य बनता नहीं हूँ। मैं तुम्हारे बुलावे पर आया हूँ पतितों को पावन बनाने। भल बुलाते हैं; परंतु उस प्रेम से नहीं बुलाते हैं; क्योंकि किसको पता नहीं है। गांधी भी गाते थे पतित–पावन..... फिर कह देते थे रघुपति राघव राजा राम। कितना गांधी का नाम है अभी भी। उनको 20वर्ष हुआ होगा। अगर शुरू से पुजारी होगा तो निकल आवेगा। कोई भिन्न नाम–रूप में होगा। ज्ञान लेता होगा अगर शुरू का पुजारी होगा तो। बाप आकर नॉलेज देते हैं पतित से पावन बनने की। गांधी फिर भी अच्छा था। उनके कर्म अच्छे थे। आगे चल शायद ऐसे–2 जो मुख्य हैं उन्हों का पता पड़ जावेगा। बाकी इन बातों से हमारा कुछ फायदा नहीं है। तुम्हारी मुख्य बात है याद की यात्रा। रात–दिन जितना हो सके बाप को बहुत प्यार से याद करना है। मोस्ट लवली बाप है। पति को अभी मोस्ट लवली नहीं कहेंगे। वह तो और ही बड़ा दुश्मन है। सभी एक/दो के दुश्मन बनते हैं। अभी तुम फिर एक/दो के मित्र बनते हो। सभी से मित्रता करते हो। यही सभी को कहते हो बाप को याद करो तो बेड़ा पार हो। तुम्हारा और कोई दुश्मन है नहीं। यह रावण ही है जिस पर जीत पानी है योगबल से। बाकी इसमें कोई स्थूल हथियार आदि की बात नहीं है। जैसे विष्णु को चार भुजाएँ दिखाते हैं, वैसे देवियों आदि के भी हथियार आदि दिखाये हैं। विष्णु को स्वदर्शनचक्र, गदा, शंख आदि देते हैं। यह अलंकार वास्तव में है तुम्हारी। यह ज्ञान की बातें हैं। बाकी सतयुग में कोई गदा आदि होते ही नहीं। यहाँ राजाओं पास पहरा होता है तो ऐसे हथियार हाथ में रहते हैं। वहाँ हथियार आदि होते ही नहीं।

बाप फिर मुख्य बात कहते हैं बाप को याद करो और कोई भी प्रश्न आदि में मूँझो नहीं। एक शिवबाबा को ही याद करना है। बाबा शांतिधाम तक साथ रहेंगे। सुखधाम तक नहीं रहेंगे। बच्चों को भी बहुत शांत रहना है। हर बात शांति से करनी है। लड़ाई झगड़े की बात ही नहीं। वह भी समय आवेगा जो किचन में भी मूवी रहेंगे। तुमको तो बहुत सूक्ष्म में जाना है। मूवी में बात करने से क्रोध की निशानी नहीं रहती। तुम्हारी है ही रूहानी यात्रा। यह कोई धक्का खाने की यात्रा नहीं है। बुद्धि में शांतिधाम याद है। सुखधाम याद है और 84 जन्म भी याद है। बाबा को याद है तब बच्चों को समझाते हैं। उठते–बैठते बुद्धि में यह याद हो हम कैसे 84 का चक्र लगाते हैं। उसमें सभी आ जाता है। कदम–2 पर सेकण्ड–2 पर ड्रामा पक्का याद रहना चाहिए। पुरुषार्थ भी करते रहना चाहिए और यह ड्रामा भी पक्का याद करना चाहिए, तो फिकरात नहीं रहेगी। समझो कोई मरता है तो कहेंगे आत्मा गई। कुछ हो नहीं सकता। कहते हैं दूध जो निकला, थन में वापस जा नहीं सकता। आत्मा भी फिर इस पुरानी दुनिया में आ नहीं सकती। कब–कब कहते हैं श्मशान में मुर्दा भी जाग पड़ा। वह आत्मा कहाँ छिपी रहती है। ऐसा कोई इत्तफाक हो जाता है। फिर कितना खुश हो जाते हैं। यह है भी सुख और दुख का खेल। सतयुग में कोई भी प्रकार का दुख नहीं होता। ड्रामा के प्लैन अनुसार समय पर आत्मा शरीर देती है। आत्मा इनडिपेंडेंट बन जाती है। तो शक्तिवान कौन ठहरा, ईश्वर या ड्रामा? दुनिया में ड्रामा को कोई भी नहीं जानते। वह कहेंगे ईश्वर शक्तिवान है, तुम कहेंगे ड्रामा। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।